मलेरिया

<u>मलेरिया क्या है</u> ?

मलेरिया एक बुखार है जो मछर के काटने से फैलता है पर इसका असली कारण Plasmodium नाम का परजीवी है । ये बिमारी कई सदियों से और अभी भी हमारे लिए एक खतरा बनी हुई हैं ।

<u>मलेरिया क्यों होता है</u> ?

मलेरिया का कारक परजीवी Plasmodium 4 प्रकार का होता है-

1. Plasmodium Vivax 2. Plasmodium Falciparum 3. P. Ovale 4. P. Malariae

- हमारे देश में Plasmodium Vivax व Plasmodium Falciparum ज्यादा पाया जाता है ।
- जब मादा अनोफेलिज़ मछर मलेरिया ग्रसित या बीमार व्यक्ति को काटता है तब Plasmodium परजीवी उस व्यक्ति के शरीर से मच्छर में आ जाते हैं । फिर ये मछर जब किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटता है तो ये परजीवी उसके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और उसे भी मलेरिया बुखार हो जाता है ।
- मलेरिया मादा अनोफेलिज़ मछर द्वारा फैलता है (मलेरिया का vector मादा अनोफेलिज़ मछर है) । ये मछर ठहरे हुए साफ़ पानी में पैदा होते हैं जैसे तालाब, हौज या टंकी का पानी । ये मछर रात में ज्यादा काटते हैं ।
- इसका incubation period 10 से 12 दिन का होता हिया यानि कि मच्छर काटने के बाद 10 से 12 दिन में लक्षण दिखने लगते हैं । आमतौर पर मलेरिया जुलाई से नवम्बर के बिच ज्यादा फैलता है ।

<u>मलेरिया के लक्षण</u>:

मलेरिया में ठण्ड लगकर, कंपकपी देकर बुखार चड़ता है । इसके साथ

- सिरदर्द
- बदनदर्द
- जी मचलना
- दस्त
- गंभीर मलेरिया में दौरे पड़ना या बेहोशी भी हो सकती है

मलेरिया का बुखार कुछ खास तरह का होता है । ये बुखार एक दिन छोड़कर एक दिन आता है और 3 स्टेज में जाता है ।

1. कोल्ड स्टेज- थकान, सिरदर्द, उलटी लगना, कंपकपी व ठण्ड के साथ बुखार चढ़ने लगता है । इस शुरुवाती दौर में हाथ, पैर एकदम ठंडे पड़ जाते हैं । यह स्टेज पौन से 1 घंटे तक रहती हैं ।
2. हॉट स्टेज -

बुखार 102 डिग्री F तक चढ़ जाता है । मरीज को बहुत गर्मी महसूस होती हैं । सिरदर्द बहुत तेज रहता है । यह स्टेज 2 से 6 घंटे तक रहरी है ।

3. Sweating स्टेज (पसीना आना)-

बहुत पसीने के साथ बुखार उतरने लागता है । बहुत थकान और कमजोरी महसूस होती है । यह स्टेज 2 से 4 घंटे तक रहरी है ।

<u>मलेरिया के जटिलताएं (complications):</u>

मलेरिया का उचित इलाज न होने पर बहुत से जटिलताएं होते हैं -

- एनीमिया - खून की कमी
- लीवर व स्प्लीन का बड़ना
- मलेरिया का relapse यानि कि बार बार होना
- Cerebral मलेरिया यानि कि मस्तिक पर असर पड़ना
- लिवर व गुर्दे पर असर पड़ना

<u>मलेरिया से बचाव</u>

1. मछर को मारना: कीटनाशक का छिड़काव करना जैसे Malathion या Pyrethrum
2. मछर के लार्वा से बचाव के लिए (जो कि पानी में होते हैं)
   - ठहरे पानी में कीटनाशक या केमिकल डालकर (Temephose)
   - लार्वा खाने वाला मछली तालाब में राखकर
3. व्यक्तिगत सुरक्षा:
   - मछरदानी (कीटनाशक लगा हुआ) का इस्तेमाल करना
   - पूरी आस्तीन व पैर ढकने वाले कपड़े पहनना
   - - मच्छर भगाने वाला स्प्रे, मशीन आदि का इस्तेमाल करना
   - घर के सभी कोनों में, फोटो फ्रेम, पर्दों, कैलेंडरों के पीछे व स्टोर रूम में मछर नाशक दावा का छिड़काव करना
   - शाम के समय घर के दरवाजें और खिड़कियाँ बंध रखना

<u>मलेरिया का उपचार</u>

- बुखार होते ही बहुत दिनों तक खुद ही या केमिस्ट से पूछ कर दवाई लेते रहना एक आम गलती है ।
- आप केवल पेरासिटामोल ले सकते हैं पर तुरंत खून की जांच करवानी भी आवश्यक है ।
- मलेरिया की दवाई डॉक्टर के परामर्श पर लेनी होती है क्योंकि मलेरिया के प्रकार के अनुसार दवाई व खुराक तय की जाती है ।